

स्व विफला इष्टमि. बदिवालहा. समभागकाथदास्य तोडः नपित्तश्रेष्ठा नत्स त्रिपातया  
 ॥ ॥ लवण. पौष्करं भृंगी जाती फलसतावरि ॥ मागधगुरुकक्षाचवर्षा भुरक्तचन्दन ॥ ना  
 गकेशरं पंचैला शर्करा एगुणा मधु ॥ आतुरं कफपित्तानां सदिपातज्वराग्रहं ॥ ॥ लव  
 ग. पुष्करामुल. लवलाच. जिफो. अवल. पिपी. अगुर. पुरा. नवा. रक्तचन्दन. रूपकेशर.  
 तेजपात. तुकम्यल. दताया. च्यादे सायल कसि नवा लान के पित्तश्रेष्ठाधिक विदोय ना  
 श ॥ ॥ पित्तश्रेष्ठाधिक सदिपातया ॥ ॥ अर्तशो जठरेदाह कठिवष्ठा च धुपनं ॥  
 ॥ भुषमडु. पेतहियु. जस्यायु. ॥ ॥ शिरो गौरवमारसं निदाशीतज्वराहजा ॥ ॥ मोद  
 सातुयु. भलासिनुयु. इददयु. जंदोकथुलाथें स्यायु. नमतायु. ॥ ॥ मन्यास्तम्भं पुवा



त्रिशतस्त्रिंशद्विंशतिगृह ॥ ॥ वाक्पत्नीयुः बालिवयुः षण्मसायुः वेकोस्यायुः ॥ ॥ सं  
 दिपातमकार्याख्याकफवाटस्वरोगाभवेत् ॥ ॥ मकरिसंदिपातथोवाटश्चेष्मसोवोपि  
 त्रिदिवो ॥ ॥ विडंगातिविषाभागी पौष्करं चित्रकं शठि ॥ शार्ङ्गिष्ठापिप्ली शुंठिपिबेदा  
 तक्फोतरे ॥ ॥ विलिसिपुः अतिथेस भागी पुसकरमुलः चिताहा सपि वैकं कगासि  
 शुथः काकलेषस फोसं तोडन्याधिवाटश्चेष्माधिकनाशविशेषनाश ॥ ॥ त्वक्चत्रं  
 चैवसूक्ष्मेला नागकेशरमेवच ॥ पिप्लीकदुकं शुंठिकारवीसदुरालभा ॥ कक्कलपौ  
 ष्करं शुंगीसमभागानिचूर्णयत् ॥ सराशपातः त्रिदोषेच काशेस्वाशे गलग्रहे ॥ कंठरोगे  
 वहिक्काच मधुनाद्वादशंगिकं ॥ ॥ त्रिसुगंधः त्वक्केशरः पिपी कदुकः शुथः हजीलः



इराजभ कवसि की पुष्क मूल कर्क रासि समभाग चुराया इ कस्मिन् बालान के विरो  
ष संदिपात काश स्यास गले सपि दस्त पु गले गे गहि का थो ते हाद शोग सले ह वाट अ  
प्याधिक संदिपात या ॥ ॥ मुर्दा या राशि ज्वरो हि का तृह्ना दा हो बल क्षय ॥ ॥ नुग  
महि निव जो को बुयु दि कु प्यास ह स्याक हे ल द व अपान पि हा व यु ॥ ॥ पर्व  
भुल प्रला पश्च विस मूत्र शो रित प्रभं ॥ ॥ अ हि आठ स्या यु नोधन न्वा यु  
स्वंगु लि ह्या उं ॥ ॥ पिं डि को वेष्ट नं भूल प्र सि ह र्व पुरो दनं ॥ ॥ देह २ सर  
पे क च स स्या क हे ली व यो यु व ॥ देहा या मं गलं भे दो दस्त कं न स्या निग्रह ॥ ॥ ल  
नं समस्त न स्या यु मि हि चा यु ॥ ॥ लिंगं विस्फुरणा स्थितु संदि पात नित्योत्पने ॥ ॥



विस्फुरकसंदिपातलक्षणा-वाटनिबोपित्तद्विवोधाये ॥ ॥ विफलात्रायमानंतुगुडची  
साधितं जलं ॥ वाटज्वरे सरादीपाते कयायंच पुसस्पते ॥ ॥ विफला-तेमाल-गुडगु-  
सभागाकाथ दासं तो नके वाताधिक संदिपातनास ॥ ॥ वाताधिक संदिपातया ॥  
बहिरंतज्वरो दाहशीतयोगाकफानिलै ॥ ॥ दुर्नेपिने हि गुडव-कोटवेधे ससि  
तलखेलहा व-वाटशेषनतनीव ॥ ॥ कुहूत-पित्तस्यासहि काकासपुमीलनात्  
॥ ॥ थोवाटश्रमकोपलपललव-सारेरे पनिव-मोसोवयु-वमिषाभिनकंक  
नेमफयु ॥ ॥ पर्वभेदि विसूचीच-प्रलापोगौरवक्तस ॥ ॥ अठिपतिं त्या पु-  
कोदयु-न्यधनवायु-व-स्नमातुजोकिव ॥ ॥ ॥ आभिषाश्वतजावृद्धि-तत्रसेदोप  
वर्तते ॥ त्यफुस-वकोस-स्थाक-वाधलपंचलपिहायु ॥ ॥ ओतेने शोणितवृद्धि



शूलं श्वासतया भृशं ॥ ॥ हासमिषा सुतुल्यं लिंगमार्गं चोतेनेहि पि हावयिव येतस्यायुः  
सारं येन निवृत्त्या सति चायुव ॥ अहोरात्रेने जीवद्वैपित्ताये शीघ्रकारिणि ॥ ॥ चोतेल  
क्षणा गतसा अहोरात्रे दिनस्यासिपुः पित्तनिवो वातश्चेष्मद्विबो धारे थोयानाम ॥ सिधु  
कारि मं निपात ॥ ॥ तदा शीतजोरो दाहो ह्युहो मधुगम्यता ॥ ॥ जोरोहनवनिवृ  
दाहजोरवयिव नुगलस्यायुव सुतुचाकयुव ॥ ॥ अरुचिगौरवालस्य श्लेष्मानि शी  
घ्रं भृशं ॥ ॥ रुचिमनु स्तज्जातुयुव अलामिनुयिव लालहिहायुव ॥ ॥ तपि मू  
र्छावमितक्षादृष्टिवाक् चोतनिग्रह ॥ ॥ स्त्रोतस्यने संतोष नुगलमद्विनिवृत्तं धनवयुव  
यासचायुव मिषा हियुयिव सहायमफयुव हसपनगामतायुव ॥ ॥ कफानिग्राह



गतपित्तकुर्वाहोपदुर्वन्जरं ॥ ॥ शेषयामोचके जज्ञयातनाव पित्तनतनिव कोवलल  
 नाव जोरया उपदुनत रुवयिव ॥ ॥ पित्तखनिगुहा कुदोमेदोम आस्थिगो निल ॥ ॥  
 धे सपित्तमोचके यातनाव वाटको पलं पं दाकस खेलस कोचशडुवनेवपितर एवयिव ॥  
 ॥ विद्वेदवहिरायाम कत्वाह सुपवाशत ॥ ॥ मलकोदये मफु अन्नमवनिव ॥ ॥  
 अन्नचेत्सादिभुक्त्वात्रिगत्रं नैवजीवति ॥ ॥ थोतेस अन्न अदिकवलनाव स्वाचाहासि  
 यु ॥ ॥ भवेत्कफागिके रूपं मरादीयातक फो ल्वरो ॥ ॥ थोतेलक्षणा शेषनिवो वाट  
 वपित्तवद्विवोधाये ॥ ॥ थो मरादीयातया नामकफनथाये ॥ ॥ क्षीणामधाधिककु  
 र्युवाटपित्तकफकमात् ॥ ॥ वाटद्विवो पित्तनिवो शेषसोवो क्रमपातीनं थथेवाध



लपु ॥ <sup>नि</sup> मध्यराहं चरं नि त्वं त्वं न्य भूले विसंशिता ॥ <sup>सं</sup> ॥ न्वरसा मय न्य चटत्वा  
युव सानन चेतना मडु ॥ ॥ मया सा हृदये कंठे मस्तके वदने हजा ॥ ॥ अको  
सनु गलस कटु स मोलस सुतु स स्थाकदयु ॥ ॥ हिक्का हृदो खग्ला निवाकांज्ञं  
हंतिसंमतिं ॥ ॥ हिक्क वयु नुग्बड ससेर पनीव मनसतु घडु त्वहाय मफु नेतान  
पयेवु ॥ ॥ समीलक कटी तोर काशस्था सनु यचतु ॥ ॥ विरवाक ने मफु लहुं रि  
शार्थं सुयाथ्य स्थाक मो सो वयुव सारेरे पनीव गुले नो वयु ॥ ॥ उत्थाद्य करण मू  
लेतु भूलं शोति गता अपि ॥ ॥ हस्तपोतया लिखने को न्या नाम नावयुव ॥ ॥ कु  
र्वति करण मूला रव्य पिंडि को करण मूलगा ॥ ॥ हस्तकोवने कटु घा वलथ नाथे



वयुः ॥ ॥ आलाकृतिः सविज्ञेयस्य हाडयोऽपि कुण्ठति ॥ ॥ थोविदारि संगदी पात  
सिये. सोडुफिये थाकु. गुलिहिनं. स्वहूवितना वकस्तनवलया इ. म्यातद्वसिये ॥ ॥ क  
गां मूलया चिकीतसा हेयनहायधुनं ॥ ॥ मध्यक्षीगा विकायस्य कुयुर्वाता दितक्रभा  
त ॥ ॥ पित्तद्विवो. वाटनीवो. श्लेष्मज्वो. वातादिकया थोपरि पातिथ्ये ॥ ॥ स्वस्थ  
रूपस्य ज्ञातया च जिह्वा मुकर्वसादिका ॥ ॥ वाटपित्तबुं धव २ व्यवहारथं वयिव मेस्य  
थं चोचककाचतुं फव ॥ ॥ कंठकृजवनिरीच मुखे चारुकोपमं ॥ ॥ कटुसथोचकं  
उनुहुनहालिव. एलहायिव. स्वाल अलतन द्विहा थं इ निव ॥ ॥ श्रुक पर्णा गल  
तं च शुष्ककरोण्य तालुकं ॥ ॥ गलस्य बाष्पापोलथनाथ्ये इ नवयु. कटुसुतुति गनीव ॥



अंतदाहो गुड भुंशवाग्नसंद विनिगृह ॥ डुवन हिईयु. अं पासल्लुयु. सस्ययमफयु. मीसा  
हिचो ॥ सरक्तंक फनि पीचक द्वा सो कं मुहुं मुहु ॥ ॥ सवयरस. हीनजासंवयु. क  
एनतुं विभाय धालेव यि उथं २ खवयल काय माल ॥ ॥ प्रमीलश्वासकाशानां प्रत्य  
हं परिवर्धनं ॥ ॥ मिखाभातिमकडु सारे रेपड मोसोकेनं संतिप्रतिदिनधालपु ॥ ॥  
अनिष्टेकामथोग्लानि पार्धवानाहतोपमं ॥ ॥ मेतेववस्तुसवां द्वायाक. तेववस्तुमय  
व. मनसमुषमडु. वेकोसवलानमुयाथे स्यायुव. ॥ ॥ कफस्याकर्षमानस्य हृदयाद  
प्रवर्त्तनं ॥ ॥ सवयेल लादपिकायथाकु. नुगोलसभेरेहेनपुगोललदतोडमत  
वथं चोनिव ॥ ॥ पार्श्वेहतो यथाकाडै मुडातेभि द्यतेभ्र सं ॥ ॥ व्यकोसमुयाथे स्या



क तव छान स्पृक कोट को नाम संदि पात मुदा रुगं ॥ मधुनाम हले होयं विदोयं त्वरि  
तं जयेत् ॥ ॥ मि कु सि अ गुर कर्कटा सि कुट उ फोल स्वा पि पि लि सा य ल चुरा या  
ना क त्वि स वा ला न के सि धु न वि दो य मो च कु ॥ डा क क्षा दि ॥ ॥ वो य क प्र न का तं ता  
प क रा मु ल का र वि ॥ वि मु ग धा च ता लि शं गी मु त वं स लो च ना ॥ पंच द सां गि के ना मा म  
धु ना म ह ले ह य त् वा त श्रे ष्म ह रं का सां हि क का श्वा म म रो च कं ॥ वि दो य म रा डी पा तं च पा र्थ  
शू लं मु दा रु गं ॥ ॥ वि क टु क व सि की ड रा लं भ पु ष्क रा मु ल ह जि शु क मे ल ते ज पा त  
दा ल चि नि ता रि स्वां क र्क टा सि क मु वं स लो च न् थ तै स म भा ग चू र्णा या ना व क ति न वा  
लं न के वा त श्रे ष्म का म हि कु व द्वा म रु चि म डु व्य को म्पा क वि दो य स गि ड पा त मो क



पचदसांग ॥ वाताश्लेषाधिक ॥ ॥ रहु मध्यमहिनांतुकुर्पुर्वादादयोक्तात् ॥ ॥ श्रुष  
छिवोपिन्नविबो-कमपरिपातथे ॥ ॥ एवंपक्षाभिष्टातंच-यत्रलिंगस्वकंस्वकं ॥ ॥  
थोयाबोहोस्यायु-गुलिहिनेथोपद्वलक्षणाव्यवहारथ्यवयु ॥ ॥ केपमूर्द्धीभुमोस्यास  
विलापरतिमोहनं ॥ ॥ स्तनुयु-नुगलमहिनीव-इकुयु-अलासिनुयु-म्वाम-नोध  
नन्वायु-तवमृगिनमरेहेनफाईव ॥ ॥ ममोहकईतिख्यातसराडीपातमुदाहरण  
॥ ॥ थोमंमोहकमराडीपात-प्रक्षाततवललाकछेयु ॥ ॥ कफूलंपौकरश्रुगिव्यो  
षानन्नाचकारवी ॥ ॥ मुस्ततालीसंतोकपत्रंशुकमेलागजकेशरं ॥ ॥ एहानिभूक्ष्मनु  
र्गाणिमधुनालेहयद्रिषक् ॥ ॥ त्रिदोषसराडीपातेषुपाञ्चहृदृष्टिश्चलिन ॥ ॥ आस



माधो

कासंजोरं घोरं हिक्का छर्दि निवारणं ॥ चतुर्दशांगिकमिदं वाग्मदे नपुयोजिता ॥ १ ॥  
कवसिकी पुष्पगमूल कर्कटासि चकटु डुरालंभ हजि कसु तालिस्वा दालचिनि  
तेजपात शुक्रमेल रूपकेशरं समभाग चूर्णा यानाकमि नवा लंब कं विदोष संगडी पातस  
योको नुगल चमपोल बोहडस्याक स्वाम काश जोरतव वेग हिक्का छर्दि थोते मोचकु  
थोचतुर्दशांग योग वाग्म हन योजरणा ॥ ॥ **चतुर्दशांगलहे** ॥ ॥ हीनपुष्ट मध्या  
श्वयत्रवा तादयक मात ॥ ॥ वाटद्विबो श्मनिबो पित्तस्वबो कमपरिपातिथोथं  
॥ प्रकुर्वेति ततो नैकं गदस्वस्वं कश्चित ॥ थव २ लक्षणा व्यवहार था बाधल पुनानापरिर  
म ॥ कफ पित्ता मज्ज क्षोभो बह्या भस्फोट संभव ॥ ॥ स्वस्वस्व रस एयो हि नवा लव यिव

१२



गानं चिनालपेमदुः ॥ इति जिह्वा परि क्षणा ॥ वातेषु पादुले मूत्रं सफेदकफरोगिरागो ॥ र  
क्तवर्णी भवेत्पित्तं मिश्रितं दं दृजे भवेत् ॥ वातया चोतुषु श्लेष्मरोगिया पीजान्जायुः पित्त  
यामूत्रस्याउ वातपित्तया तुषु स्याउ वातश्लेष्मया तोषु पिजान्जावु पित्तश्लेष्मया स्याउ पिजा  
नजायुः दं दया शोथ ॥ सन्निपाते तु कृत्वा म्यादेतत् मूत्रं सलक्षणां ॥ विदोषमन्निपातञ्चुल  
लाव मूत्रं हाकु युव थोते मुचलक्षणा मेये ॥ नारि जिह्वा च मुत्राणालक्षणां योनर्विदंति  
यत्या शुभं तु नां विद्या यत्रैर्विचारयत् ॥ नादिभेद नीहलक्षणा मुचलक्षणा मसि व  
गीशीघ्रं नमोच किमु थोते न थोदको यत्त्र विचारया यमाल ॥ तस्मात्सर्वप्रयेंते  
पिबित्सयेत् ॥ शास्त्रमेतत्पठित्वा यत्पुण्यं मया ॥ तेनात्मी यजन्ना संतु-



ॐ श्रीविनं ॥ ॥ जुजलनं थोते परिक्षाया इ तु वै च लोकचिकित्सायाय तेव थोसा  
विचारया इ न रोगी हे यकं पुराणलाना फलन थव अहितजनदको निरोगी चिरंजी  
पञ्चलं ॥ ॥ **नाडी जिह्वा मुत्र लक्षण** ॥ ॥ हत्वा भिषा युदर कुक्ष तो दगात्रावशादानिल  
म निरोध ॥ वित्तसंगना ध्यानम थावि पाको विभक्त तस्तस्य पुरः समसि ॥ ॥ जुगल ते फु अं  
गम च सस्यायुः दिस चेल ये हल मडु को फ सम दं ग्वि काश वो फ रा वो मिल लपं ट ना व को  
दव पाक म व इ प्य ट रो म जु य यो पुर्व रूप थ थि इ ॥ ॥ अरुणां फे निल रुक्ष मल्प मल्प  
मुहु मुहु मक्ष दा मं सरु क श वं मा रु ते ना ति सार्य ते ॥ ॥ हे ह न व इ पी जा न जा व चे क न म  
लोक चि भा ये २ ३ थं नि का स व ज्ञा क को द व पा त त्या त व श व द व थो ते वा त न जु व प त लो



सिधे ॥ ॥ पंचमूलीवताविश्वधाम्य का तलविल्वजा ॥ वातातिसारिणो देया त्रकेणास्यत  
विश्व ॥ गिनियालहा व्यालहा पातलिहा वालवेहा थोते वाहा शुठि गोत्व घं उ फोल  
व व्याल धते धलिति मफे मे तो न के वातातिसार नेव ॥ ॥ पित्रात्पीतं हरितं लोहितं  
गृह्णा मूर्च्छा दाहपाकोपपत्रं ॥ ॥ पित्तनजुव णट्या एयो वा दु हिका दु वणा मनु गल  
दिहियु अपा मम ककुदयु थ थं कदयु ॥ ॥ मधुकंक फलं लोधं दादि मस्य त्वचं  
पित्रातिसार मधुकं पाये नंदुरा मुना ॥ ॥ ईषमि कवमिकी गुल्याद कसि धाले  
की मिलाती स कसि होइ थोते तो न के पित्रातिसार नेव ॥ ॥ शुक्रं शादु मक  
तु विश्वसितं हृष्टं रोमा मनुयं ॥ ॥ तो युव ह्यु अटिक रव यिव पिडः



मानवावसाहसचिम्बकंकडियको ॥ ॥ सोवच्चलंवचाव्यो वहिगुमतिविषा  
पिबेहेष्मातिसारचचूर्णितकोसवारिणा ॥ ॥ मुवाछलचिकटुहिंयुअतियस  
मेतचूर्णयानादुतुलेयमतोइनश्चष्मातिसारनाम ॥ ॥ सोवच्छलादि ॥ ॥ श्रेष्ठा  
॥ वातवोपित्तवोनापज्याकलक्षणाजुलसावातपित्तातिसारधाय ॥ ॥ वी  
॥ ॥ वातकीपादाशुठिमोचरमसमा ॥ वातपित्तातिसारप्रगुडतकेनदुर्जय ॥ ॥ व्याल  
॥ ॥ धलिस्नानवाहापुमुठिसिमरमसमभागचूर्णयानाधलितिमफेमंडोहोइतो नके  
॥ वातपित्तातिसारया ॥ विल्वादि ॥ वातपित्तातिसारधोते ॥ ॥ वातश्रेष्णनेतानापज्याक  
॥ क्षणाजुलनावकातश्रेष्मातिसारधाय ॥ ॥ चित्रकातिचियामुत्तावालविल्वसना



गरं ॥ वसकं त्वक्कलापयावातश्चेष्मातिमारनुत् ॥ ॥ चित्रकः अतियसः कमुचालः वाचा  
उठि कठवीजः दालचिनी मदनफलः हलदः धौतेचूर्णधलितिसफोसे तोनकेवातश्चेष्मातिमा  
रमोक ॥ **चीत्रकादि ॥** ॥ वातश्चेष्मातिमारया ॥ ॥ पित्रवोश्चेष्मवोनापज्यातनावः पित्तश्चे  
ष्मातिमारसिद्धे ॥ ॥ कूटजातिविद्यामुस्तहरिद्रा परांतीनीद्वयं ॥ सक्षौद्रशर्करा सर्पिपित्तश्चे  
ष्मातिमारसिद्धे ॥ ॥ कूटविजः अतिरसः कमुः हलदः मालपरांतीः पृष्टपरांतीः कस्तिमावल  
नकालनके पित्तश्चेष्मातिमारनाशः ॥ **कूटजाती ॥** ॥ पित्तश्चेष्मातिमार ॥ ॥ बराहमेह  
॥ सः सृष्टं सर्वरूपिणं ॥ कुरु साध्यमतीमारं विद्या होषचयोद्रवं ॥ ॥ फायादाकथे  
॥ याधं इग्वसर्वरूपविदो वरा जायते अतिमारलायेके पाकु ॥ ॥ विस्व



॥ कीलौ धंगज पि पली वाल के ॥ कुह मासिक शंयुक्त ले ह्यं मर्वतिसार नुत ॥ ॥ धा  
॥ लिस्मान गुल्वा द गज पि पली वाल कुट चुराया द कस्मि न वाल न के ॥ विदोष नास  
॥ अन्नाजीरणी प्रदता क्षो भयंत को ह दोषा धातु मष्टा मलाश्च ॥ नाना वर्णा ने कशः सा  
॥ अति भूलोपेतं षष्टमे न वदति ॥ ॥ अन्नाजीरणी मवज्व प्रवृत्तिया द वव धव रथानम  
॥ अतुल्य चो गु रमरक्तादि मरुच मल वो वाल वव तरता वनि तर स्ने धाले को ड व ण टस्या  
॥ कन ल ड आमा तिसार न नापे पुता हाया ॥ ॥ सत्त्व षमे भिदोषैस्तन्यस्तम षव सी दति  
॥ गुरिसे भृश दुर्ग धपि हिले चाम स जिते ॥ ॥ थोते दोष स आम न वाल से य लं व स  
॥ तर ना सं वो ड वि को थोले ख अति न मे क त व दान थ ॥ आमा तिसार सिरे ॥ ॥ धा



यगागरमुस्तचवालकं विल्वमेव च ॥ आमशुलविवंधपुपाचनंवहीदीपनं ॥ ॥  
गोमधं शुठि कसुवाल च्याचा थोतेपोडचिसंल्लेसं सकुड दायके दायकं पाउकं आम  
शुलविवंधमोक मलपाक वगुअग्निकर ॥ **धान्यपंचक** ॥ पिण्लीचा भया मुस्त  
नान्य शुठि विडंममा ॥ आम शुलंकु क्षिरोगमजिर्णं च विनाशनं ॥ पिण्ली हलडक  
म गोमोचं शुठि व्यदचि थामतनेग्रपु ईमु थोतेचूर्ण पाड ममभागनम्यं आमशुल  
मतलोय अरामोक ॥ **पीपल्यादि ॥ आमातिसारया ॥** चरादनमुस्तकोशीरशु  
लानागकेशरं ॥ वालकंतगरकुष मजिषादिगुरागमकं ॥ चूर्णमधुपुतंल्लेहं कफरक्त  
चनं ॥ श्रीषण्द मुस्त उसलहा मुक्ष्मेला रूपेकेशर वाल तं गंराज कुट म



॥ धोते न चूर्णाया इ-कामिनवालं न के-शेष न वाल-हिन ग्याक-अमातिसार पाग  
 नादि ॥ आमर-कथा ॥ सतान्येव तु लिंगा निविशरीता नियम्य वै ॥ आ प्रवर्तु  
 विचनत स पकं विनिर्दिशेत् ॥ ॥ धोते लक्षणा स विपरीत नुवसिय मल लेय सले हेन  
 र-ना-पाक बंगु सिय-धो पकातिसार सिय ॥ ॥ मलो धु-पा की विल्व मुस्ता मूला मि क लिंग  
 के ॥ पिपे ला हि सत के रा पकातिसार नामनं ॥ गुल्वा द-धलि स्त्रान व्या चा-कमु-अव पु-ई  
 इजव-धोते चूर्णाया ना-मे स धलि ती स फो म्यं तो ड न-पकातिसार नास ॥ ॥ लोधादि ॥  
 वसी भूना गरं रा स्ता गुं थि के कंठ कारिका ॥ सुरशरु युतं फ-नं सो धातिसार नाशनं ॥ ॥  
 पूरु न-धा-शुदि दु गुल्वा द-हा-पि पला नू-कठ कारि-व-धा-धोते निम्यं तो ड न-सो धा